दो साल बाद रॉ शुगर का फिर से आयात

प्रोसेसिंग के लिए महाराष्ट्र की मिलों ने 4.5 लाख टन आयात के लिए सौदे किए

रॉयटर्स • मुंबई/सिंगापुर

करीब दो साल के अंतराल के बाद भारतीय मिलों ने 4.5 लाख टन रॉ शुगर आयात करने के सौदे किए हैं। घरेलू बाजार के मुकाबले विदेश में दाम कम होने की वजह से चीनी का आयात दुबारा शुरू हो रहा है। मिलों ने अक्टूबर से दिसंबर के बीच डिलीवरी के लिए ब्राजील से रॉ शुगर आयात के सौदे किए हैं।

कारोबारियों ने बताया कि पश्चिमी और दक्षिणी भारत की मिलों और अंतरराष्ट्रीय ट्रेडिंग फर्मों ने 500 डॉलर प्रति टन (सीआईएफ आधार पर) के भाव पर रॉ शुगर आयात पर सौदे किए हैं क्योंकि घरेलू बाजार में चीनी (व्हाइट शुगर) के दाम पिछले तीन माह में बढ़कर 680 डॉलर प्रति टन तक चले गए हैं। ब्राजील के बाद दुनिया के सबसे बड़े उत्पादक देश भारत में इससे पहले वर्ष 2009-10 में चीनी का आयात किया गया था। उससे विश्व बाजार में चीनी के दाम बढ़कर 30 साल के उच्च स्तर पर पहुंच गए थे।

भारत से लगातार दो वर्षों से चीनी का निर्यात किया जा रहा था क्योंकि उत्पादन घरेलू खपत से ज्यादा था। लेकिन अनायास आयात शुरू होने से विश्व बाजार में दाम बढ़ने की संभावना बन गई है। वैश्विक स्तर पर बैंचमार्क न्यूयॉर्क का रॉ शुगर फ्यूचर सोमवार को मजबूत रहा क्योंकि प्रमुख उत्पादक देश ब्राजील में बारिश हो रही है। हालांकि वैश्विक स्तर पर ज्यादा स्टॉक रहने की संभावना से भाव दो साल के निचले स्तर के करीब रहे।

रुख बदला

- विश्व बाजार में दाम कम होने से मिलों को आयात में फायदा
- कम गन्ना मिलने की संभावना से प्रोसेसिंग के लिए रॉ शुगर मंगाई
- घरेलू बाजार में दाम काफी ज्यादा जबकि विदेश में निचले स्तर पर

पिछले 6 सितंबर को रॉ शुगर का भाव दो साल के निचले स्तर 18.81 सेंट प्रति पाउंड पर रह गया था। एक ग्लोबल ट्रेडिंग फर्म के मुंबई में डीलर ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय और भारतीय मूल्य में इतना ज्यादा अंतर है कि प्रोसेसिंग खर्च और परिवहन लागत निकालने के बाद भी आयातकों को 60 डॉलर प्रति टन का फायदा हो सकता है। भारत में अगले मार्केटिंग सीजन 2012-13 के दौरान लगातार तीसरे साल घरेलू खपत से ज्यादा उत्पादन होने की संभावना है। हालांकि भारतीय उत्पादन में पिछले साल के मुकाबले कमी आने का अनुमान है।

शुगर ब्रोकरेज फर्म कमल जैन ट्रेडिंग सर्विसेज के प्रमुख कमल जैन ने कहा कि अगले सीजन में महाराष्ट्र में मिलों को पर्याप्त गन्ना मिलने की संभावना नहीं है। इसी वजह से वे रॉ शुगर प्रोसेसिंग करके अपनी क्षमता का उपयोग करने की योजना पर काम कर रही हैं। भारत रॉ शुगर के आयात पर 10 फीसदी आयात शुल्क लगता है।